जीवन में कुछ कर गुजरने व विभिन्न चुनौतियों का सामना करने के बाद मंजिल की ओर कदम बढ़ाते हुए एक शिक्षक की कहानी, जिनका एक मात्र उद्देश्य नौनिहालों का वर्तमान व भविष्य संवारने का रह गया हो, जो मानते हैं कि लक्ष्य की ओर चल पड़ना ही लक्ष्य पाने की शुरुआत होती है, ऐसे ही शिक्षक हैं वंशीधर जोशी जो राजकीय प्राथमिक विद्यालय बोहाला में कार्यरत हैं।

यह विद्यालय बागेश्वर मुख्यालय से 30 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। सड़क से करीब दो किलोमीटर की चढ़ाई चढ़ते हुए हम विद्यालय पहुंचते हैं। इस रास्ते में एक बड़ा सा सुंदर गांव दिखाई देता है जिसका नाम बोहाला है। गांव काफी सुंदर है। रास्ते में चलते हुए बहुत सारे लोगों से परिचय भी होता है एक–दूसरे का हालचाल पूछना आम बात है। पलायन की मार ने इस गाँव को भी नहीं छोड़ा धीरे–धीरे यह गांव भी खाली होता जा रहा है। गांव के बुजुर्गो व बच्चों ने बदलते हालात और गांव के खाली हाते जाने की दास्तान सुनाई तो दुःख और हैरत से मन भर उठा।

गाँव का रास्ता समाप्त होते ही थोड़ी दूरी पर स्थिति है राजकीय प्राथमिक विद्यालय बोहाला, यहाँ पर वंशीधर जोशी प्रधानाध्यापक के पद पर कार्यरत हैं। विगत तीन वर्षों से वे इस विद्यालय में सेवा दे रहे हैं, वे इससे पहले विवेकानंद प्राइवेट विद्यालय एवं प्राथमिक विद्यालय जांठा में कार्यरत रहे। 2016 में प्राथमिक विद्यालय बोहाला आए तो यहां की स्थिति को देखकर उनका मन उदास हो गया। अपनी बातचीत के दौरान उन्होंने बताया कि प्राइवेट विद्यालय में एक कक्षा में 30 से ज्यादा बच्चे रहते थे तो पढ़ाने मे मजा आता था किन्तु यहाँ पर स्थितियाँ उसके उलट थीं। विद्यालय में कुल 11 बच्चे थे। गांव के अधिकांश बच्चे नजदीक के प्राइवेट विद्यालय मे जाते थे। कहीं पर एक कक्षा में तीस बच्चों के साथ काम करना और कहीं पर पूरे विद्यालय में 11 बच्चों के साथ काम करने की शुरुआत करना चुनौती पूर्ण कार्य था।

उन्होंने ने बताया कि गाँव में काफी बच्चे हैं किन्तु वह सरकारी विद्यालय में नहीं आते हैं। इसका क्या कारण है इसकी तह में जाना उनकी जिम्मेदारी बन गई। विद्यालय काफी दूरस्थ है, मूलभूत सुविधाओं का अभाव है, पीने के लिए पानी नहीं है व भवन भी टूटा हुआ है ।बरसात में बच्चों को बैठने के लिए स्थान नहीं मिल पाता है। सामने पहाड़ जैसी चुनौतियाँ अपनी बाहें फैलाए खड़ी थीं और इन चुनौतियों का सामना करने के लिए अकेले" थोड़ी निराशा भी हुई किन्तु यदि मन में कुछ

करने की ठान ली हो तो सभी कठिनाइयों से निजात मिल जाती है। अब शुरुआत हुई सीढ़ियाँ चढ़ने की, सबसे पहले विद्यालय की सफाई की गई, लगभग तीन–चार दिन साफ सफाई मे लगे। बंद पड़े हुए बक्सों के तालों को खोला गया जिस सामान का उपयोग कर सकते हैं उनको उपयोग के लिए रखा गया। इसके बाद दूसरा काम था समुदाय को

विद्यालय से जोड़ना, उन्हें विश्वास दिलाना कि सरकारी विद्यालय में बच्चे पढ़ सकते हैं और यहाँ के शिक्षकों में इतनी काबिलियत है कि बच्चों को पढ़ा सकते हैं। अब शुरुआत हुई गाँव के प्रत्येक घर में संपर्क करने की साथ मे आंगनबाड़ी शिक्षिका की सहायता ली गई। उनके साथ बैठकर पूरी योजना बनाई गई, और गाँव–गाँव घर–घर जाकर लोगों को शिक्षा के प्रति जागरूक किया गया। समुदाय को विश्वास दिलाया गया कि यदि आप अपने बच्चों का नामांकन इस विद्यालय में करते हैं तो मेरी जिम्मेदारी है आपको बेहतर रिजल्ट दिलवाने की। आपको वर्ष के शुरुआती दिनों मे बताया जाएगा कि आपका बच्चा कहाँ पर है, वह क्या–क्या जानता है। प्रत्येक बच्चे के बारे मे महीने के अंत में बताया जाएगा कि इस बच्चे में किस प्रकार का बदलाव आया है तथा आने वाले महीने में किस पर काम करने की जरूरत है। इस प्रकार का वादा समुदाय के साथ किया गया, इसमें एक सवाल प्रत्येक अभिभावक से आ रहा था कि प्राइवेट स्कूल के शिक्षक ज्यादा मेहनत करते हैं वहाँ अच्छी पढ़ाई होती है?

सर ने अपनी बातचीत में बताया कि इसका उत्तर तो नहीं दे सकता था किन्तु मैंने कहा कि इस विद्यालय में आने से पहले मैंने विवेकानंद प्राइवेट विद्यालय में पढ़ाया है। मुझे पता है कि प्राइवेट विद्यालय में किस प्रकार की पढ़ाई होती है, आप लोगों को एक बात समझनी पड़ेगी हम वही शिक्षक हैं जो प्राइवेट विद्यालय में पढ़ा चुके हैं और आज हम वही सरकारी विद्यालय में पढ़ा रहे हैं। समुदाय को थोड़ा विश्वास हुआ और उनके विश्वास को कायम रखना अब मेरी जिम्मेदारी बन गई थी। 2017 में यहाँ पर बच्चों की संख्या 11 से बढ़कर 46 हो गई। शिक्षक प्रत्येक बच्चे की जिम्मेदारी लेने लगे। प्रत्येक बच्चे के बारे लिखना शुरू कर दिया। महीने के अंत में अभिभावकों के साथ बच्चों के सीखे हुए को साझा किया। बच्चे कैसे सीखते हैं? इसका विवरण अभिभावकों को बताया गया। धीरे–धीरे समुदाय का विश्वास बढ़ने लगा। वैसे तो शिक्षा में प्रतियोगिता करना नकारात्मक है किन्तु यदि लोगों का इस बात पर विश्वास है कि प्रतियोगिता होनी चाहिए और सरकारी विद्यालय की अपेक्षा प्राइवेट विद्यालय काफी बेहतर हैं। आज हमारी प्रतियोगिता प्राइवेट विद्यालय से है।

समुदाय को विश्वास दिलाया गया यदि हमारी योग्यता अन्य विद्यालय से कम रही तो आप अपनी मर्जी से अपने बच्चों का नामांकन किसी भी विद्यालय में करवा सकते हैं इसके लिए हम आपको कभी नही रोकेंगे। किन्तु एक बार आपको हमें यह मौका देना पड़ेगा। शिक्षक विद्यालय जाते हुए या छुट्टी के बाद घर आते हुए अभिभावकों से मिलते हैं। बच्चों के बारे में बातचीत करते

हैं आज स्थिति इस प्रकार है कि– जैसे ही स्कूल की छुट्टी होती है वैसे ही अभिभावक अपने घर से बाहर निकल जाते हैं और अपने बच्चों के बारे मे चर्चा करते हैं। छुट्टी के बाद भी शिक्षकों को अभिभावकों से बातचीत करने मे काफी समय लगता है। कभी–कभी तो एक घंटे से अधिक समय लग जाता है। इस सब प्रक्रिया मे आंगनबाड़ी की शिक्षिका ने मेरी बहुत सहायता की। यदि उनकी मदद नहीं मिलती तो आज मैं अपने काम को इतने अच्छे तरीके से नहीं कर पाता। छुट्टी के बाद जितना अतिरिक्त समय मै बच्चों के साथ विद्यालय में रहता था उतना ही समय वे भी विद्यालय में रुकती और बच्चों के पढ़ने–लिखने में मदद करती। आज आंगनबाड़ी शिक्षिका का उद्देश्य भी बच्चों का भविष्य संवारना बन गया है।

उन्होंने ने 2017 मे वार्षिक उत्सव रखा जिसमें विभिन्न लोगों को आमंत्रित किया गया तथा समुदाय के लोगों को बुलाया गया। बच्चों ने विभिन्न कार्यक्रम प्रस्तुत किए, स्वतंत्र रूप से अपनी बात को लोगों के सामने रखा। समुदाय को अच्छा लगा कि उनके बच्चे इतने लोगों के सामने अपनी बात रख पा रहे हैं। इतने दूरस्थ गाँव में ये बच्चे इतने विश्वास के साथ अपनी बात कह पा रहे हैं ये किसी उपलब्धि से कम नहीं था। इन बच्चों को देखकर मेरी आँखें छलक पड़ी शायद मेरा उद्देश्य पूरा हो रहा था इन नन्हें बच्चों के लिए जो सपना मैने देखा था उसको अपने सामने पूरा होते हुए देखना मेरे लिए बहुत बड़ी उपलब्धि थी। एक शिक्षक के लिए इससे से बढ़कर क्या उपहार हो सकता है कि उसके बच्चे अपनी बात कह पा रहे हैं। इस गाँव मे कुछ ही समय पहले सड़क बनी है कुछ बच्चों को तो यह भी पता नही था की सड़क पर गाड़ी कैसे चलती है, या गाड़ी क्या होती है।

वार्षिक उत्सव के दिन मैंने अतिथियों एंव समुदाय के लोगों के सामने प्रत्येक बच्चे के बारे में अपना लिखा हुआ रिकॉर्ड प्रस्तुत किया, जिसमे था कि बच्चा जब विद्यालय मे आया था तो वह कैसा था और कुछ समय के उपरांत बच्चे में क्या बदलाव आया। एक साल में बच्चे ने क्या–क्या सीखा है। इस बात से समुदाय काफी प्रभावित हुआ और 2018 शैक्षणिक सत्र में अभिभावकों ने अपने बच्चों का प्राइवेट स्कूल से निकालकर इस विद्यालय में नामांकन किया। करीब 35 बच्चों का इस सत्र में

नामांकन किया गया। विद्यालय में अब छात्र/छात्रा संख्या 46 हो गई। एकल होने के कारण लगातार आंगनबाड़ी शिक्षिका का सहयोग मिलता रहा और सीखन–सिखाने की प्रक्रिया बेहतर होती गई। सभी बच्चों के पास व्यक्तिगत रूप से जाना होता है। यह काफी बड़ी चुनौती होती है, किन्तु छुट्टी के बाद भी अतिरिक्त समय इन बच्चों को दिया जाता है। बच्चे समय–समय पर होने वाली ब्लॉक स्तरीय व जनपद स्तरीय प्रतियोगिता में प्रतिभाग करते हैं और हर बार प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त करते हैं।

सत्र 2018 में उन्होंने ने समुदाय की मदद से बच्चों के साथ मिलकर विभिन्न विषयों पर जानकारी एकत्र की ताकि अभिभावकों को पता हो कि बच्चों के सीखने–सिखाने में उनकी भूमिका व उनके अनुभव कितने महत्वपूर्ण हैं। यदि वह खुद को पढ़ा–लिखा नहीं मानते हैं तो इसका मतलब यह नहीं है कि वह शिक्षा में योगदान नहीं दे सकते हैं। उनके अनुभव बच्चों के सीखने में मददगार साबित होंगे। बच्चों के साथ मिलकर विभिन्न विषयों की जानकारी का विश्लेषण किया। उसे व्यवस्थित किया और एक दिन 'बाल मेले' का आयोजन किया जिसमें समुदाय के लोगों को बुलाया गया उनको बताया गया कि बच्चों के सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में उनकी भूमिका कितनी महत्वपूर्ण है।

समुदाय को काफी अच्छा लगा जब बच्चों ने बताया कि आपके द्वारा प्राप्त जानकारी को हमने चार्ट के इस कोने पर लिखा है। समुदाय को विद्यालय से कैसे जोड़ सकते हैं, इसका एक उदाहरण यहाँ देखने को मिलता है। वे एकल शिक्षक होने के कारण प्रशिक्षण में प्रतिभाग नहीं कर पाते हैं किन्तु एक दूसरे शिक्षक की सहायता से अपडेट होने का उन्हें मौका मिला है। शिक्षक, शिक्षिका व समुदाय की कठिन मेहनत व लगन के कारण यहां पर बच्चों की संख्या 48 हो गई है। बच्चे पुस्तकालय में अपने पसंद की किताबें, कहानियां, कविताएं पढ़ते हैं, समूह में कार्य करते हुए सीखते हैं। विद्यालय में बच्चों के लिए पीने के लिए पानी एंव बैठने के लिए कुछ कक्षा–कक्ष हैं जो काफी व्यवस्थित एंव आकर्षक हैं। ग्रीष्मकालीन एवं शीतकालीन अवकाश में बच्चों के सीखने–सिखाने के लिए कैम्प का आयोजन किया जाता है, छुट्टी के बाद अतिरिक्त कक्षाएं संचालित की जाती हैं।

''जब से वंशीधर सर आए हैं तब से हमारे बच्चों में बहुत बदलाव हुये हैं, उनके आने से विद्यालय का माहौल ही बदल गया है। शिक्षक काफी मेहनती हैं मन लगाकर काम करते हैं। जब भी गाँव मे कोई समारोह होता है उसमें शिक्षक प्रतिभाग करते हैं। अपने जीवन काल में इतने मेहनती शिक्षक हमने

कम देखे हैं। वास्तव में शिक्षक क्या और कौन होता है यह हमें वंशीधर जी से सीखने को मिला। जैसे हमारे बच्चे इस विद्यालय में सीख रहे हैं वैसे प्राइवेट विद्यालय में नहीं सीख सकते हैं।

– गिरि सिंह उपाध्याय, अभिभावक

वंशीधर जी का शिक्षक का काम करने का तरीका अन्य शिक्षकों से थोड़ा अलग है और इसका अलग होने का कारण यह है कि जब भी कोई बच्चा इस विद्यालय में प्रवेश लेता है तो शिक्षक उसके परिवार, माता–पिता व उसके बचपन के बारे मे पूरा रिकॉर्ड लिखते हैं, कहाँ पर बच्चे को सहायता की जरूरत है, किन–किन पक्षों पर काम करने की जरूरत है। इसके बाद इन मुद्दों पर योजना बनाई जाती है और वह रिकॉर्ड आपको दीवार पर कहीं टंगा हुआ मिल जाएगा। जब बच्चों के साथ योजना के अनुसार काम किया जाता है तो उसकी प्रोग्रेस रिपोर्ट बनाई जाती है। उनका व्यक्तित्व सहज है, बच्चों के साथ मित्रवत व्यवहार है, समुदाय के साथ काफी घनिष्ठ संबंध हैं जो उनका मजबूत पक्ष है और यह बातें उनको अन्य शिक्षकों से अलग करती हैं। उनकी मेहनत का परिणाम रहा कि इस दूरस्थ विद्यालय के बच्चे विभिन्न ब्लॉक स्तरीय प्रतियोगिताओं मे प्रथम एंव द्वितीय स्थान पर आते हैं। बच्चों की संख्या काफी बढ़ी है। पहले की अपेक्षा आज स्कूल की व्यवस्था एंव बच्चों मे काफी बदलाव आया है।

–हेम लोहानी, बी.आर.पी.

(वंशीधर जोशी की मीमांशा गोदियाल से हुई बातचीत पर आधारित)

मुद्रक तथा प्रकाशक प्रदीप चन्द्र डिमरी द्वारा अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन फॉर डेवलपमेंट के लिए अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन फॉर डेवलपमेंट, आनंद टावर, 2 सहस्त्रधारा क्रांसिग, अधोईवाला, देहरादून-248001, उत्तराखण्ड की ओर से प्रकाशित एवं शब्द संस्कृति प्रकाशन प्रा.लि., 117 चुक्खूवाला, देहरादून, उत्तराखण्ड द्वारा मुद्रित।

सम्पादक : कैलाश चन्द्र काण्डपाल